



24 January, 2024

फसल अवशेष प्रबंधन (CRM) परिचालन दिशानिर्देश

2023-24

संदर्भ: भारत ने जुलाई में वित्त वर्ष 2023-24 के लिए फसल अवशेष प्रबंधन (CRM) दिशानिर्देश जारी किए, जिसमें उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, मध्य प्रदेश और दिल्ली को शामिल किया गया है।

सीआरएम दिशानिर्देशों के उद्देश्य:

- फसल अवशेष प्रबंधन (सीआरएम) दिशानिर्देशों का मुख्य उद्देश्य पराली जलाने से होने वाले प्रदूषण को कम करना और विशेष रूप से जैव ऊर्जा समर्थन के लिए कृषि-अवशेष आपूर्ति श्रृंखला में उद्योग-किसान की भागीदारी को बढ़ावा देना है।
- यह दिशानिर्देश धान के पुआल को जलाने के पर्यावरणीय प्रभाव पर जोर देते हैं, जिसमें प्रति टन धान के पुआल से 3 किलोग्राम पार्टिकुलेट मैटर, 60 किलोग्राम CO₂, 1,460 किलोग्राम CO₂, 199 किलोग्राम राख और 2 किलोग्राम SO₂ निकलने का हवाला दिया गया है।

कार्यान्वयन तंत्र:

- वर्तमान दिशानिर्देश किसानों को बायोएनर्जी उद्योग से जोड़ने वाली कृषि-अवशेष बायोमास आपूर्ति श्रृंखला की स्थापना का प्रस्ताव करते हैं।
- फसल अवशेष प्रबंधन के लिए ट्रैक्टर, बेलर और रैकर सहित बायोमास एकत्रीकरण के लिए आवश्यक मशीनरी को 65% सरकारी निवेश, 25% उद्योग योगदान और 10% किसानों या किसान-उत्पादक संगठनों (एफपीओ) से प्राप्त होगा।
- इसमें धान के पुआल की आपूर्ति श्रृंखला मशीनरी स्थापित करने के लिए सांकेतिक व्यवस्थापन दिशानिर्देशों में प्रदान किया गया है।

नियामक निकाय:

कृषि और किसान कल्याण विभाग और राज्य कृषि विभागों को सीआरएम पहल की देखरेख करने वाले केंद्रीय नियामक निकायों के रूप में नामित किया गया है।

लक्ष्य और वित्तीय सहायता:

इस योजना का लक्ष्य अगले तीन वर्षों में 1.5 मिलियन टन धान का पुआल एकत्र करना है, जिसमें 600 करोड़ रुपये की कुल वित्तीय सहायता के साथ 333 संग्रह केंद्र स्थापित किए जाएंगे।

किसानों और उद्योग को लाभ:

- इससे किसानों को आय का एक अतिरिक्त स्रोत प्राप्त होता है, जबकि यह उद्योग फीडस्टॉक की विश्वसनीय आपूर्ति सुनिश्चित करता है।
- इसमें किसानों और उद्योग के बीच सहयोग को प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे पारस्परिक वित्तीय लाभ होता है।
- यह पहल हरित ऊर्जा के उत्पादन में योगदान देती है, जिससे फायदे की स्थिति बनती है।

चुनौतियाँ और स्पष्टीकरण की आवश्यकता:

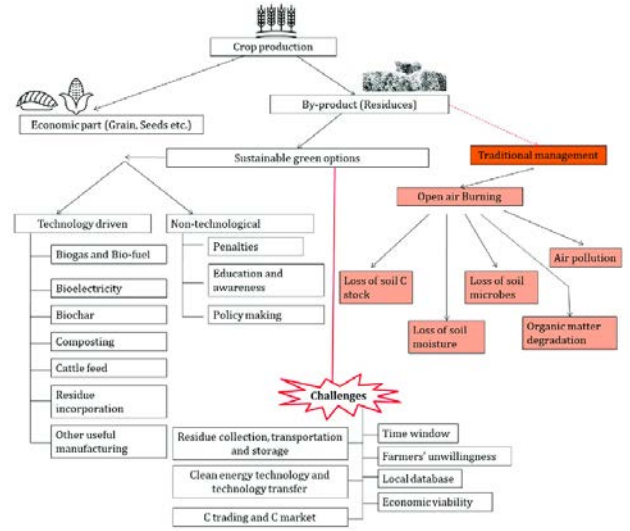
- पारंपरिक कार्यान्वयन के लिए एक निर्दिष्ट समय-सीमा का अभाव एक चुनौती है।
- आपूर्तिकर्ताओं को निधि हस्तांतरण प्रक्रिया के संबंध में, अस्पष्टता दिखाई पड़ती है।
- किसानों को स्वतंत्र रूप से उद्योग की पहचान करने और उसके साथ सौदेबाजी करने का काम सौंपा गया है।
- इस दिशानिर्देश में 12 में से तीन महीने उपयोग में आने वाली मशीनरी के उपयोग और राजस्व-साझाकरण मॉडल को स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया गया है।

सीआरएम 2020-21 के साथ तुलना:

- वर्ष 2023-24 की गाइडलाइन में मध्य प्रदेश को शामिल करने से इसका दायरा बढ़ गया है।
- 25% पूंजीगत योगदान के साथ सक्रिय उद्योग भागीदारी भी इस दिशा में एक उल्लेखनीय परिवर्तन है।
- दिल्ली के एनसीटी को छोड़कर, फंडिंग को 60:40 सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) के आधार पर विभाजित किया गया है।
- वर्ष 2020-21 में पूर्ण वित्त पोषित मॉडल के विपरीत, किसान पूंजी व्यवस्था और उद्योग के साथ विपणन में सक्रिय रूप से भागीदार हैं।

सकारात्मक विकास:

- वर्ष 2023-24 का दिशानिर्देश जैव ऊर्जा उद्योग पर केंद्रित है।
- यह विकेंद्रीकरण राज्य और नोडल एजेंसी स्तरों पर निर्णय लेने की सुविधा प्रदान करता है।



- इसमें जैव ऊर्जा पारिस्थितिकी तंत्र में शोषण के रूप में सक्रिय किसान भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाता है।
- विभिन्न कार्यान्वयन चुनौतियों के बावजूद, इस पहल को भारत में जैव ऊर्जा अपनाने की दिशा में एक सकारात्मक कदम के रूप में देखा जाता है।

एंड-टू-एंड एन्क्रिप्शन

संदर्भ: पिछले महीने में, मेटा ने एक अरब से अधिक सदस्यों वाले अपने मैसेजिंग प्लेटफॉर्म मैसेंजर (जो फेसबुक से अलग हो गया था) के लिए डिफॉल्ट एंड-टू-एंड एन्क्रिप्शन के क्रमिक कार्यान्वयन की शुरुआत की है।

कूटलेखन (एंड-टू-एंड एन्क्रिप्शन):

- कूटलेखन में जानकारी को एकत्र किया जाता है और इसे सुरक्षित रखने के लिए एन्क्रिप्शन का उपयोग किया जाता है।
- इस समय एंड-टू-एंड (ई2ई) एन्क्रिप्शन ने, विशेष रूप से, सुरक्षा, अभियोजन या लाभ के लिए व्यक्तियों की जानकारी तक पहुंच और उपयोग के संबंध में मानवाधिकार संगठनों, कानून प्रवर्तन और प्रौद्योगिकी कंपनियों के दृष्टिकोण को बदल दिया है।
- एन्क्रिप्शन डिजिटल संपत्तियों की सुरक्षा और डिजिटल युग में गोपनीयता सुनिश्चित करने हेतु एक मौलिक उपकरण के रूप में कार्य करता है।

एन्क्रिप्शन के मूल सिद्धांत:

- एन्क्रिप्शन में विशिष्ट नियमों के आधार पर उपयोगी जानकारी को अप्राप्य रूप में बदल दिया जाता है।
- उदाहरण के तौर पर डेटा एन्क्रिप्शन स्टैंडर्ड (डीईएस) के साथ विभिन्न एन्क्रिप्शन नियम की उपस्थिति इस कार्य को सरल बना देती है।
- एन्क्रिप्शन की प्रक्रिया संवेदनशील डेटा को सुरक्षित रखने और अनधिकृत पहुंच को रोकने का एक मुख्य उपकरण है।

एन्क्रिप्शन को समझना:

- एन्क्रिप्शन जानकारी को लॉक (एन्क्रिप्ट) और अनलॉक (डिक्रिप्ट) करने के लिए विभिन्न प्रकार की कुंजियों (Keys) का उपयोग करता है।
- सममित एन्क्रिप्शन में एन्क्रिप्शन और डिक्रिप्शन के लिए एक ही कुंजी का उपयोग किया जाता है, जबकि असममित एन्क्रिप्शन विभिन्न कुंजी का उपयोग करता है।
- सममित और असममित एन्क्रिप्शन के बीच का चुनाव सुरक्षा आवश्यकताओं और डेटा के उपयोग पर निर्भर करता है।

एन्क्रिप्शन के प्रकार:

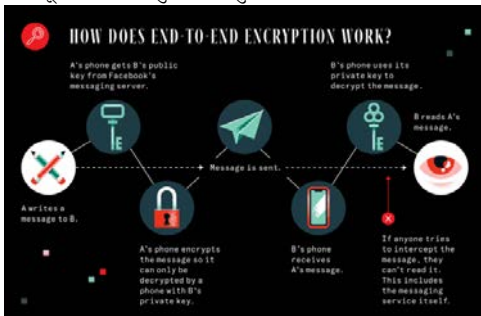
- सममित एन्क्रिप्शन उदाहरणों में डीईएस और उन्नत एन्क्रिप्शन मानक (एईएस) शामिल हैं।

Face to Face Centres



24 January, 2024

- असममित एन्क्रिप्शन में सार्वजनिक और निजी कुंजी युग्म शामिल होते हैं, जो विभिन्न संस्थाओं के बीच सुरक्षित संचार सुनिश्चित करते हैं।
- एन्क्रिप्शन एल्गोरिदम का कार्यान्वयन सुरक्षा स्तर और संरक्षित किए जा रहे डेटा के प्रकार जैसे कारकों के आधार पर भिन्न होता है।
- **एन्क्रिप्शन में हैश (Hash) फंक्शन:**
 - अपने विशिष्ट गुणों के कारण हैश (Hash) फंक्शन संदेशों को एन्क्रिप्ट करता है, जिसमें अद्वितीय संदेशों के लिए अद्वितीय एन्क्रिप्शन भी शामिल होता है।
 - डेटा एन्क्रिप्शन स्टैंडर्ड (डीईएस) एल्गोरिदम एक हैश फंक्शन का उपयोग करता है जिसे फ्रिस्टेल फंक्शन कहा जाता है।
 - एन्क्रिप्टेड संदेशों की अखंडता और सुरक्षा सुनिश्चित करने में हैश फंक्शन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- **E2E एन्क्रिप्शन और इसका तंत्र:**
 - E2E एन्क्रिप्शन डिजिटल संचार के विशिष्ट माध्यमों से संचालित होता है।
 - संदेशों को ट्रांजिट और प्राप्त दोनों अवस्थाओं में एन्क्रिप्ट किया जाता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि डिजिटल संचार केवल तभी होता है जब प्राप्तकर्ता को संदेश प्राप्त होता है।
 - E2E एन्क्रिप्शन डिजिटल संचार को सुरक्षित करने और अनधिकृत अवरोधन को रोकने में एक प्रमुख तत्व है।
- **सुरक्षा और संभावित खतरे:**
 - मैन-इन-द-मिडिल (एमआईटीएम) हमले ई2ई एन्क्रिप्शन के लिए खतरा उत्पन्न करते हैं, जहां एक हमलावर एन्क्रिप्शन और डिजिटल संचार कुंजी प्राप्त करके संदेशों को रोकता है।
 - फ्रिगरप्रिंट सत्यापन सुरक्षित कुंजी विनिमय सुनिश्चित करके MITM हमलों को रोक सकता है।
 - उभरते खतरों और कमजोरियों को दूर करने के लिए एन्क्रिप्शन प्रोटोकॉल को अपडेट करने जैसे नियमित सुरक्षा उपाय आवश्यक हैं।
- **E2E एन्क्रिप्शन की चुनौतियाँ और सीमाएँ:**
 - E2E एन्क्रिप्शन संचारित सामग्री की सुरक्षा के संबंध में उपयोगकर्ता को संतुष्ट कर सकता है।
 - यह मेलवेयर उपकरणों तक अपनी पहुँच बना सकता है और एन्क्रिप्शन से पहले संदेशों तक पहुँच सकता है।
 - कई कंपनियाँ E2E एन्क्रिप्शन से समझौता कर सकते हैं, जैसा कि एडवर्ड स्नोडेन के मामले में देखा गया है।
 - कंपनियाँ बैकडोर या अपवाद स्थापित करके E2E एन्क्रिप्शन सुरक्षा मामलों से समझौता कर सकती हैं, जैसा कि एडवर्ड स्नोडेन मामले के खुलासे से पता चलता है।
 - E2E एन्क्रिप्शन के कार्यान्वयन में उपयोगकर्ता की सुविधा और सुरक्षा को संतुलित करना एक सतत चुनौती है।
- **विधान और अवैध उपयोग:**
 - डेटा निगरानी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कंपनियों को कानून द्वारा विकल्प तलाशने की आवश्यकता है।
 - अवैध उपयोग के उदाहरण, जैसे कि एडवर्ड स्नोडेन द्वारा स्काइप के दुरुपयोग E2E एन्क्रिप्शन के अवैध उपयोग की संभावना को बढ़ाते हैं।
 - अभी भी गोपनीयता अधिकारों और निगरानी क्षमताओं की आवश्यकता के बीच तनाव एक जटिल कानूनी और नैतिक चुनौती बनी हुई है।



➤ **मेटाडेटा और निगरानी:**

- E2E एन्क्रिप्शन के साथ सभी संदेश; मेटाडेटा का उपयोग निगरानी उद्देश्यों के लिए कर सकते हैं।
- निगरानी लक्ष्य संदेश के समय, आवृत्ति और शामिल उपयोगकर्ताओं सहित स्थानों के बारे में जानकारी इकट्ठा करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
- गोपनीयता संबंधी चिंताओं को संबोधित करने के लिए ये संदेश कंटेंट और संबंधित मेटाडेटा दोनों पर विचार करते हुए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता पर जोर देते हैं।

निर्यातित उत्पादों पर शुल्कों और करों में छूट (RoDTEP) योजना

संदर्भ: कथित डब्ल्यूटीओ मानदंड उल्लंघनों के लिए पिछले वर्ष अमेरिका और यूरोपीय संघ द्वारा लगाए गए प्रतिकारी शुल्कों के बावजूद भारत सरकार अपनी RoDTEP योजना पर पुनर्विचार नहीं करेगी।

➤ **अमेरिका और यूरोपीय संघ के प्रतिकारी कर्तव्य:**

- अमेरिका और यूरोपीय संघ द्वारा विशिष्ट भारतीय उत्पादों पर काउंटरवेलिंग शुल्क (सीवीडी) लगाए गए थे, जिनमें पेपर फ्राइल फ़ोल्डर, सामान्य मिश्र धातु एल्यूमीनियम शीट और स्टील तरल पदार्थ आदि शामिल थे।
- सीवीडी निर्यातक देश की सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली सब्सिडी, की भरपाई के लिए लागू किए गए टैरिफ हैं; जिसका उद्देश्य घरेलू उद्योगों की सुरक्षा करना है।

➤ **दस्तावेजीकरण चुनौतियाँ और अनुपालन:**

- सीवीडी जांच का सामना करने वाले निर्यातकों को अमेरिकी जांचकर्ताओं को यह प्रदर्शित करने की आवश्यकता है कि प्राप्त लाभ छूट है, प्रोत्साहन नहीं।
- इसके लिए निर्यातकों को बिजली बिल और मूल्य वर्धित कर (वैट) का भुगतान दिखाना होगा, लेकिन आवश्यक दस्तावेजों को लम्बे समय तक बनाए रखने में चुनौतियाँ भी हैं।

➤ **सरकार की प्रतिक्रिया और डब्ल्यूटीओ अनुपालन:**

- सरकारी अधिकारी ने विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के मानदंडों के अनुपालन पर जोर देते हुए कहा कि RoDTEP योजना पर पुनर्विचार करने का इस समय कोई इरादा नहीं है।
- वर्तमान में कुछ निर्यातकों को आवश्यक दस्तावेज दिखाने में कठिनाई हुई, जिससे उन्हें दस्तावेजीकरण प्रक्रिया से परिचित कराने के प्रयास शुरू हो गए।
- जनवरी 2021 में शुरू की गई RoDTEP योजना, WTO-असंगत मर्चेंडाइज एक्सपोर्ट्स फ्रॉम इंडिया स्कीम (MEIS) का स्थान लेती है और इसका उद्देश्य निर्यात शुल्कों और करों को कम करना है।

➤ **RoDTEP परिचालन ढांचा:**

- RoDTEP योजना एक संघीय बजटीय ढांचे के भीतर संचालित होती है, जिसमें फार्मास्यूटिकल्स और लौह तथा इस्पात सहित विभिन्न वस्तुओं के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए वित्त वर्ष 23-24 के लिए 15,070 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं।
- यह योजना ईंधन पर वैट, मंडी कर और बिजली शुल्क जैसे अंतर्निहित शुल्कों को कम करने का लक्ष्य रखती है।

➤ **चुनौतियाँ और बाजार पहुंच:**

- बाजार पहुंच की आवश्यकता के लिए भागीदार देशों के साथ इन मुद्दों को हल करने की तत्काल आवश्यकता है जो भारतीय नीतियों की व्याख्या और भी उचित ढंग से कर सकते हैं।
- इस प्रकार डब्ल्यूटीओ अनुपालन में पारदर्शिता और पूर्वानुमेयता अनिवार्य है, जो प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करने की सरकार की जिम्मेदारी को चिन्हित करती है।

➤ **कार्यान्वयन और निरीक्षण का महत्व:**

- वर्तमान संदर्भ में RoDTEP योजना के कार्यान्वयन का महत्व बढ़ गया है, क्योंकि अमेरिका और यूरोपीय संघ द्वारा प्रतिकारी शुल्क लगाए जाने के बाद अन्य देशों द्वारा इसकी जांच होने की प्रबल संभावना है।
- उद्योग की अन्य चिंताओं को दूर करने और उसका अनुपालन बनाए रखने के लिए इस योजना की डब्ल्यूटीओ अनुकूलता को प्रभावी निरीक्षण और निरंतर समीक्षाओं के साथ जोड़ा जाना चाहिए।

Face to Face Centres





24 January, 2024

- कुछ गैर-अनुपालन संस्थाओं के कार्यों के कारण संभावित जोखिम से बचने के लिए निरीक्षण आवश्यक है।
- उद्योग की चिंताएँ और सरकार का सावधानीपूर्वक दृष्टिकोण:
- उद्योग की अन्य चिंताओं में योजना के भीतर कम दें, निरंतर समीक्षा और निगरानी की आवश्यकता पर जोर देना आवश्यक है।
- सरकार को संभावित नुकसान से बचाने के लिए सावधानीपूर्वक कार्यान्वयन सुनिश्चित करना चाहिए, विशेषकर तब जब निर्यात में गिरावट का सामना करना पड़ रहा हो।

विशेषता	ROSTCL	MEIS (RoSTCL द्वारा प्रतिस्थापित)	RoDTEP
पूर्ण रूप	राज्य और केंद्रीय लेवी और करों की वापसी योजना	भारत से वस्तुओं का निर्यात योजना	निर्यातित उत्पादों पर शुल्क या करों की छूट
WTO अनुपालन	हाँ	नहीं	हाँ
प्रोत्साहन का आधार	एफओबी मूल्य	कुल मूल्य का 2% - 5%	कुल मूल्य का 1% (सूचित किया जाएगा)
प्रोत्साहन का रूप	इलेक्ट्रॉनिक ड्यूटी क्रेडिट स्क्रिप्ट	हस्तांतरणीय स्क्रिप्ट	डिजिटल क्रेडिट स्क्रिप्ट
फोकस	निर्यात के दौरान भुगतान किए गए अप्रत्यक्ष करों का प्रतिपूर्ति	निर्यात के लिए प्रत्यक्ष प्रोत्साहन	उत्पादन में उपयोग किए जाने वाले अप्रत्यक्ष करों और लेवी का प्रतिपूर्ति
वर्तमान स्थिति	सक्रिय	निष्क्रिय	सक्रिय

NEWS IN BETWEEN THE LINES

कांगला किला



हाल ही में, मणिपुर के एक कट्टरपंथी मीतेई समूह अरामबाई टेंगोल ने राज्य के विधायकों को इफाल के कंगला किले में एक बैठक के लिए बुलाया है।
कांगला किले के बारे में:

- कंगला किला मणिपुर की महानता का प्रतीक है जो इम्फाल नदी के सूखे पश्चिमी तट पर स्थित है।
- यह राज्य की ऐतिहासिक राजधानी थी।
- मणिपुरी भाषा में "कंगला" का अर्थ "सूखी जमीन" होता है।
- 1891 तक यह मणिपुर के मीतेई वंश शासकों की पारंपरिक राजधानी के रूप में कार्य करता था।
- इफाल में सबसे बड़ा हिंदू वैष्णव मंदिर, गोविंदाजी मंदिर, कंगला किले के बगल में स्थित है।
- यह किला मैतेई लोगों के लिए एक पवित्र स्थान है और इसे मणिपुरियों के लिए सबसे पवित्र स्थान माना जाता है।
- किले की बाहरी और भीतरी खाई और अन्य अवशेष मणिपुर की समृद्ध कला और स्थापत्य विरासत को दर्शाते हैं।
- बर्मा के आक्रमणों के दौरान, विशेष रूप से चाही तारेट खुंटका (1819-1826) के दौरान किले को कई बार नष्ट किया गया और छोड़ दिया गया।

मिमोसा प्रजाति



असम की मौजूदा स्थिति से पता चलता है कि मिमोसा प्रजाति जैसे आक्रामक पौधों के तेजी से प्रसार, जैव विविधता के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा है।
मिमोसा प्रजाति:

- मिमोसा, असम में एक संवेदनशील और अत्यधिक आक्रामक पौधे की प्रजाति है जिसकी उत्पत्ति अमेरिका में हुई है।
- मिमोसा को असमिया में नीलाजी बॉन या लाजुकी लता कहा जाता है क्योंकि इसकी संवेदनशील मिश्रित पत्तियाँ अंदर की ओर मुड़ जाती हैं और छूने या हिलाने पर झुक जाती हैं।
- इसे दो किस्मों में पहचाना गया है पहला है मिमोसा इनविसा और दूसरा है मिमोसा इनविसेनर्मिस, जिसमें से एक काटेदार (मिमोसा इनविसा) है।
- शोधकर्ताओं का सुझाव है कि चाय उद्योग ने नाइट्रोजन स्थिरीकरण और मिट्टी संवर्धन के लिए इस क्षेत्र में मिमोसा का उपयोग किया होगा।
- भारतीय वन्यजीव ट्रस्ट (डब्ल्यूटीआई) के 2002 के एक अध्ययन में काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान के आसपास की नदियों के पास मिमोसा के प्रसार की पहचान की गई।
- मिमोसा का प्रसार काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में बागोरी रेंज के 56% कवरेज के साथ चरम पर था।

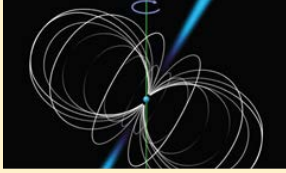
Face to Face Centres





24 January, 2024

पीएसआर बी1919+21



- PSR B1919+21 (PSR B1919+21), जिसे LGM-1 के नाम से भी जाना जाता है, एक पल्सर प्रकार का न्यूट्रॉन तारा है जिसे 28 नवंबर, 1967 को जॉर्जिन बेल बर्नेल और एंटनी हेविश द्वारा खोजा गया था।
- यह अब तक खोजा गया पहला रेडियो पल्सर था और इसे अक्सर क्लासिक रेडियो पल्सा के रूप में जाना जाता है।
- इसकी अवधि 1.3373 सेकंड और पल्स चौड़ाई 0.04 सेकंड है।
- यह बुलपेकुला तारामंडल में स्थित है और पृथ्वी से 1,950-1,650 प्रकाश वर्ष दूर है।
- जब बेल बर्नेल ने दोहराए गए स्पंदों की खोज की, तो उन्होंने उन्हें LGM कहा, जिसका अर्थ "लिटल ग्रीन मैन (little green men)" है।

सुर्खियों में व्यक्तित्व

होमी जहांगीर भाभा

होमी जहांगीर भाभा (30 अक्टूबर 1909-24 जनवरी 1966):

भारतीय परमाणु भौतिक विज्ञानी होमी जहांगीर भाभा को "भारतीय परमाणु कार्यक्रम के जनक" के रूप में जाना जाता है।

- उन्होंने इलेक्ट्रॉनों द्वारा इन कणों के सैद्धांतिक प्रकीर्णन की जांच की, जो फोटॉन के कॉम्पटन प्रकीर्णन के अनुरूप एक प्रक्रिया थी।
- उन्होंने 1963 में भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान संस्थान की अध्यक्षता की।
- उन्होंने कॉस्मिक किरणों को समझने में योगदान दिया।
- उन्होंने ऑल इंडिया रेडियो प्रसारण में दावा किया कि यदि अनुमति दी जाए तो भारत 18 महीनों में परमाणु बम बना सकता है।
- उन्होंने कॉस्मिक किरणों में इलेक्ट्रॉन और पॉज़िट्रॉन वर्षा के उत्पादन का सिद्धांत विकसित किया जिसे "भाभा-हेइटलर सिद्धांत/Bhabha-Heitler theory" के रूप में जाना जाता है।
- उन्होंने तिरुवनंतपुरम के पास थुम्बा में भारत का पहला रॉकेट लॉन्चिंग स्टेशन स्थापित करने में डॉ. साराभाई का समर्थन किया।
- उन्होंने यूरेनियम निकालने के लिए थोरियम के उपयोग की शुरुआत की।



पुरस्कार और सम्मान:

- होमी जहांगीर भाभा अपने डॉक्टरेट थीसिस के लिए 1942 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय द्वारा एडम्स पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले भारतीय थे।
- उन्हें 1954 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।
- उन्हें 1948 में कैम्ब्रिज फिलॉसॉफिकल सोसायटी द्वारा हॉपकिंस पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था।

नैतिक मूल्य: वैज्ञानिक सत्यनिष्ठा, ईमानदारी समर्पण, आदि।

सुर्खियों में व्यक्तित्व

कर्पूरी ठाकुर

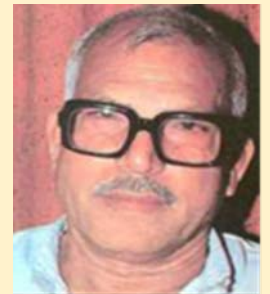
भारत के प्रधानमंत्री ने जन नायक कर्पूरी ठाकुर को उनकी जन्मशती पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

कर्पूरी ठाकुर (24 जनवरी 1924-17 फरवरी 1988)

- कर्पूरी ठाकुर, एक भारतीय राजनीतिज्ञ और सामाजिक कार्यकर्ता थे जिन्हें जननायक" या पीपुल्स लीडर के नाम से जाना जाता है। इनका जन्म बिहार के समस्तीपुर जिले के पितौझिया (अब कर्पूरी ग्राम) गाँव में हुआ था।
- वे महात्मा गांधी और सत्यनारायण सिन्हा से प्रभावित थे।
- योगदान:**
- कर्पूरी ठाकुर दो बार बिहार के मुख्यमंत्री रहे: दिसंबर 1970 - जून 1971 और दिसंबर 1977 - अप्रैल 1979।
- 1977 में उनके मुख्यमंत्रित्व काल में मुंगेरी लाल आयोग की रिपोर्ट आई जिसमें पिछड़े वर्गों के पुनर्वर्गीकरण की सिफारिश की गई।
- वे ऑल इंडिया स्टूडेंट्स फेडरेशन में भी शामिल हुए।
- एक छात्र कार्यकर्ता के रूप में उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल होने के लिए अपना स्नातक छोड़ दिया।
- वे 1952 में बिहार विधान सभा के सदस्य बने।
- उन्होंने संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया।

पुरस्कार और सम्मान:

- हाल ही में उन्हें 26 जनवरी 2024 को मरणोपरांत भारत रत्न देने की घोषणा की गई है।
- नैतिक मूल्य:** देशभक्ति, नेतृत्व, ईमानदारी, साहस, आदि।



Face to Face Centres





24 January, 2024

सुर्खियों में स्थल

बांग्लादेश

हाल ही में, शोधकर्ताओं ने 19 जनवरी को अंटार्कटिका के गेरलाचे स्ट्रेट में एक हंपबैक व्हेल की पूंछ देखी है।
गेरलाचे जलडमरूमध्य के बारे में:

- गेरलाचे जलडमरूमध्य जिसे डी गेरलाचे जलडमरूमध्य या डेट्रोइट डे ला बेल्लिका के नाम से भी जाना जाता है एक चैनल/जलडमरूमध्य है जो पामर द्वीपसमूह को अंटार्कटिक प्रायद्वीप से अलग करता है।
- शुरुआत में इसका नाम अभियान जहाज बेल्लिका के नाम पर रखा गया था जिसे बाद में अभियान कमांडर लेफ्टिनेंट एड्रियन डी गेरलाचे के सम्मान में बदल दिया गया।
- गेरलाचे जलसंधि क्षेत्र में चार पहचान योग्य टेक्टोनिक ब्लॉक हैं जो तृतीयक स्ट्राइक-स्लिप फॉल्ट्स के दो सिस्टम द्वारा चित्रित हैं।
- जलडमरूमध्य के गहरे चैनल ऊपरी सर्कम्पोलर गहरे पानी को शेल्फ क्षेत्रों में प्रवाहित करने की अनुमति देते हैं, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र को गर्मी मिलती है।

कूबड़ा व्हेल (हंपबैक व्हेल):

- हंपबैक व्हेल (मेगाटेरा नोवाएंग्लिया) एक बड़ी, दांत रहित बेलन व्हेल है जो समुद्री जल से शिकार को छानने के लिए बेलन प्लेटों का उपयोग करती है।
- इसे अपने व्यवहार और जटिल गीतों के लिए जाना जाता है।
- इसका शरीर 6 से 33 मीटर लंबा और इसका वजन 30,000 किलोग्राम तक हो सकता है।
- इसमें लंबे फिलिपर्स होते हैं जो उनके शरीर की लंबाई का लगभग एक तिहाई होते हैं।
- इसमें एक छोटा पृष्ठीय पंख होता है जो त्रिकोणीय या छोटे कूबड़ के आकार का हो सकता है।
- यह बेहद सक्रिय है और अक्सर समुद्र की सतह पर अपने फिलिपर्स और फ्लूक्स मारता है।
- वे प्रजनन और भोजन के लिए व्यापक प्रवास करते हैं।
- यह लुप्तप्राय प्रजाति अधिनियम और समुद्री स्तनपायी संरक्षण अधिनियम के तहत संरक्षित है।



POINTS TO PONDER

- 19वां गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) शिखर सम्मेलन कहाँ आयोजित किया गया था? - **कम्पाला**
- पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो (बीपीआरडी), जो हाल ही में खबरों में था, किस मंत्रालय के अंतर्गत आता है? - **गृह मंत्रालय**
- निम्नलिखित में से कौन सा अरावली पर्वतमाला का उच्चतम बिंदु है? - **गुरु शिखर**
- किस भारतीय परमाणु भौतिक विज्ञानी को "भारतीय परमाणु कार्यक्रम के जनक" के रूप में जाना जाता है - **होमी जहांगीर भाभा को**
- हाल ही में 26 जनवरी 2024 को मरणोपरांत किसे भारत रत्न देने की घोषणा की गई है - **कर्पूरी ठाकुर**

Face to Face Centres

